

## Культура Древней Индии

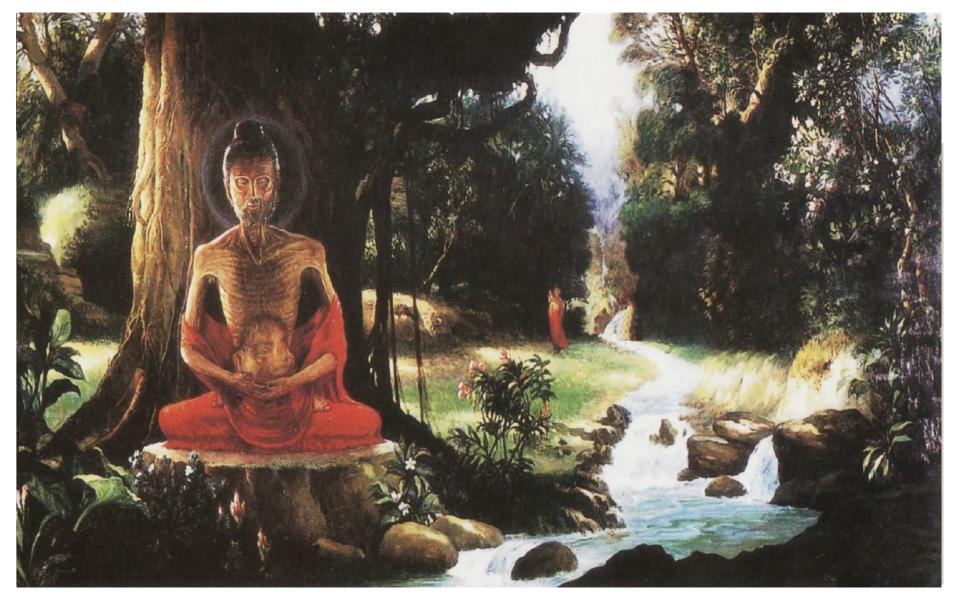


Индийская мифология











### ПУРУША



ВЕДЫ

उतिष्ठंत्रक्षपादेनदृष्ट्रशिववुधष्मान्। २१ । प्राम्यदं उत्तर्भू माव्यतस्य हिरणां जितः ॥

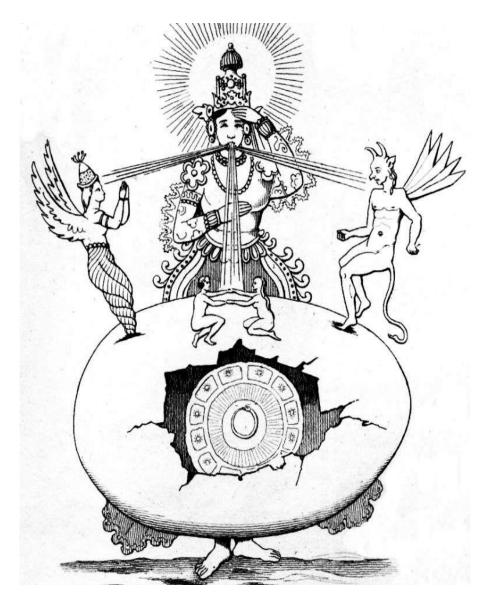
२२ १ हषहं ससुपर्गस्थानं से: से श्रिंद्वे श्र्यविद्वितान् ॥ कृपावलोक्षेनह् सद्देने ने प्रवितान ॥ २० ॥ तक्के विषाप्रतिहते निर्माल्यमुनिरिक्षरणी ॥ चेत्रस्वकरणं युं जनस्तावी विश्वास्त्र स्वावास्त्र स्वावास्त्र विष्ठित्र स्वावास्त्र स्वावास्त्र स्वावास्त्र स्वावास्त्र स्वावस्त्र स्वावस्त्य

## КНИГА ГИМНОВ «РИГВЕДА»

दौषवर्षाश्चरंयोगान्यवेयासहरोः स्वरेः। पदानेदेनपादानां विनागोनिस् मीद्य ते। छ दस्य संपदं तां तां यो येमन्ये तपादतः।। प्रायोशिवन्निमत्ये तपाद ज्ञानस्य हे तवः। विशेष्रसं निपाते तुष्ट्रविष्ट्रप्रतेष्ट्रग्राह्म त्रुवास् दोनो वर्जी किया विचते पद। पादा दाव उरा ते उ उ यह न्य ता दिला दिता। वशे स्ती मंद्रा स्वीत्ये कमानिष्टर ति चर-चे। ने ति प्रवीणि मवीणि मधु छंद स्मृताव्यी। स्तीमश रेपरेधायि सत्त शर्परेशिय परेशिय ते हुवे नुराणा में अत्स् वे ने प्रमानत ने तरा प्रदेवलिति चेत्रिमंग्रके पार्दी भिपंचमा। सर्वा न दा तंब ट स्ट स्वादि तश्रित रेशः। पा दो गा मनवै राजाव ष्टा दो र दशा त्रासा । एका रोश हा दिश नीविधा बैष्टमनागती। शाविषिष्ठा भिष्ठयोरेषा तथ्यो तममसरागुर्व वतरयोर्जित्वतह तंछंद मां शाहः। एते श्छं तं मिवती ते वार्यं न्ये र ताल माड शः। एति दिका रा ए बान्ये मर्वे तु त्री हाताः क्रमां। एकएक परे देविते या दो पादी दिप दो चाति। ते उत्ते वे वे वो चो ते मरूपेय स्थेपा दतः। न राश

य

च



#### СОТВОРЕНИ Е МИРА ИЗ ЗОЛОТОГО ЯЙЦА



## АСУРА

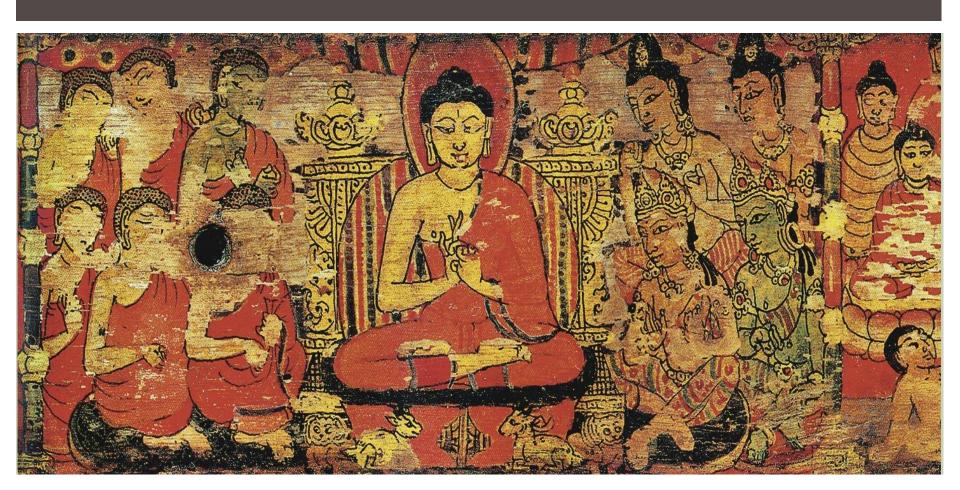
# ХРАМ ЯМУНОТРИ И ХРАМ ГАНГОТРИ ОТКРЫВАЮТСЯ ПО БЛАГОПРИЯТНОМУ СЛУЧАЮ ПРАЗДНИКА АКШАЯ ТРИТИЯ.

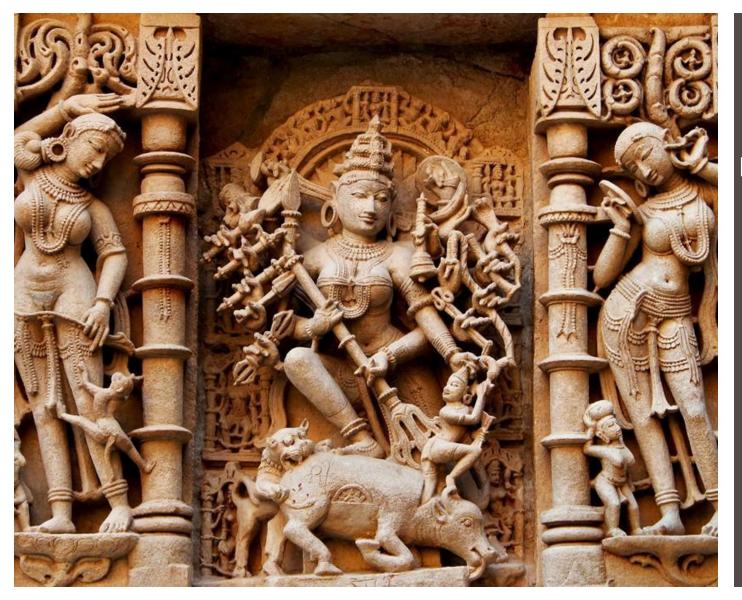




#### ПАРАШУРАМА

## ДРЕВНЕИНДИЙСКОЕ ИСКУССТВО





СКУЛЬПТУРЫ В ХРАМЕ КАЛИ



СТАТУЯ ЖРЕЦА НАЙДЕННАЯ В МОХЕНДЖО-ДАРО



ПЕЧАТЬ ХАРАППСКОЙ ЦИВИЛИЗАЦИИ



ПРООБРАЗ БРАХМАНСКОГО ШИВЫ



#### СТАТУЯ ЯКШИНИ

## УПАНИШАД

M-139

किंकारणमिति २

उसमेवब्रास्याणवाक्याश्रंभोपिन यत्परिसमानेरुत्तरिमंत्राः प्रतिपादयेति विकारणं प्रसित्ताः प्रपादानकारणं ब्रह्मिक मन्पद्वात्तराष्ट्रपादानकारणं ब्रह्मकी दृश्चेष्ठद्वमिवद्यामिलितेवा स्रथवाब्रह्मिकंकारणमिवश्चेष्ठणानिमित्ते। पादनकारणं स्राह्मिकंकारणमिवश्चिम्पर्याद्वस्थायं प्रदेशकार्यस्तां संतः स्रष्ठित्रप्रलयोदिष्ट्रभ्यात्वा स्राह्मिकं स्राह्मिक

किकारगंत्रव्यक्ताः साजाताजीवामकेनकचंत्रप्रतिष्ठाः अधिष्ठितांकेनस्वेतरेषुचवर्तामहेत्रद्वविद्येव्यवस्थाइतिर

स्यानीयत्रहाणः सकाशाज्ञातात्तीवार्मकेनेलर्ड्योलोइ तीवाप्रःकेनवयंत्रीवामोद्देष्टनिक्माश्चरिण्वाउत्ताभयेनाहा वित्तवभावेनक्कच्चंग्रातिष्ठाः माचावस्यायामसमाकंविकारस्तेत्रहाणिकंमेकत्वेनावस्थानं उतस्वतिविकारिणामधा प्रित्तितत्वेनविकारिणात्रहाण्यात्रहाण्यात्रहाणिकंमेकत्वेनविद्याद्यात्रहाणिकंमेकत्वेनविद्याद्यात्रहाणिकं स्वत्रहाणिकं स्वति स्वति



#### КОЛЕСО CAHCAP Ы

Бесконечная цепь перерождений



### ТРИМУРТИ



## БРАХМ А



## вишну



### ШИВА